Name of the college → APSH College Barauni
Name → Dr. Rajesh Kumar Suman
Deptt → Economics
Designation → [GT]
Date → 29.11.2021
Unit → 04
Class → B.A. Part I [H]
Paper → B1L

Name of the topic → [Consumer's Behaviour]

⇒ हिक्स के प्रतिस्थापन प्रभाव में उपभोक्ता एक ही उदासीनता वक्र पर एक ही संयोग बिन्दु से दूसरे संयोग बिन्दु पर स्थानान्तरित हो जाता है। हिक्स के प्रतिस्थापन प्रभाव में उपभोक्ता का सन्तुष्टि स्तर नहीं बदलता।

हिक्स के अनुसार प्रतिस्थापन प्रभाव में वास्तविक आय के परिवर्तन को समाप्त करने के लिये मौद्रिक आय में क्षतिपूर्ति परिवर्तन किया जाता है। आय में क्षतिपूर्ति परिवर्तन के आधार पर प्रतिस्थापन प्रभाव सापेक्ष कीमतों में परिवर्तन के प्रभाव को मापता है जब कि वास्तविक आय को मौद्रिक आय के समायोजन द्वारा पूर्ववत स्थिर कर दिया जाता है।

वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों में अन्तर आने पर उपभोक्ता अपने व्यय को सापेक्षिक रूप से सस्ती वस्तु के पक्ष में पुनर्आवंटित करता है और इन वस्तुओं को महँगी वस्तुओं द्वारा प्रतिस्थापित करता है।

⇒ स्लट्स्की के प्रतिस्थापन प्रभाव में मौद्रिक आय में परिवर्तन 'लागत-अन्तर' के आधार पर किया जाता है अर्थात उपभोक्ता की आय में परिवर्तन पूर्व कीमत पर वस्तु की क्रय की गई मात्रा की लागत और नई कीमत पर उसी मात्रा की लागत में अन्तर के बराबर किया जाता है।

स्लट्स्की के प्रतिस्थापन प्रभाव में उपभोक्ता एक ऊँचे उदासीनता वक्र पर पहुँच जाता है और उपभोक्ता की संतुष्टि में वृद्धि हो जाती है।

वस्तु कीमत कम होने पर स्लट्स्की का प्रतिस्थापन प्रभाव मात्रात्मक रूप में हिक्स के प्रतिस्थापन प्रभाव से अधिक होता है। और वस्तु कीमतें अधिक होने पर

Scanned with CamScanner

प्रतिस्थापन प्रभाव सामान्य रूप में हिक्स के प्रतिस्थापन प्रभाव की तरह होता है—
उपभोक्ता की आय एवं एक वस्तु की कीमत स्थिर रहने की दशा में दूसरी वस्तु की कीमत परिवर्तित होने के फलस्वरूप मांग में जो परिवर्तन उत्पन्न होता है उसे कीमत प्रभाव कहते हैं।
सामान्य वस्तुओं में कीमत प्रभाव के अन्तर्गत मांग का नियम प्रभावी होता है अर्थात् कीमत घटने पर मांग बढ़ती है तथा कीमत बढ़ने पर मांग घटती है।

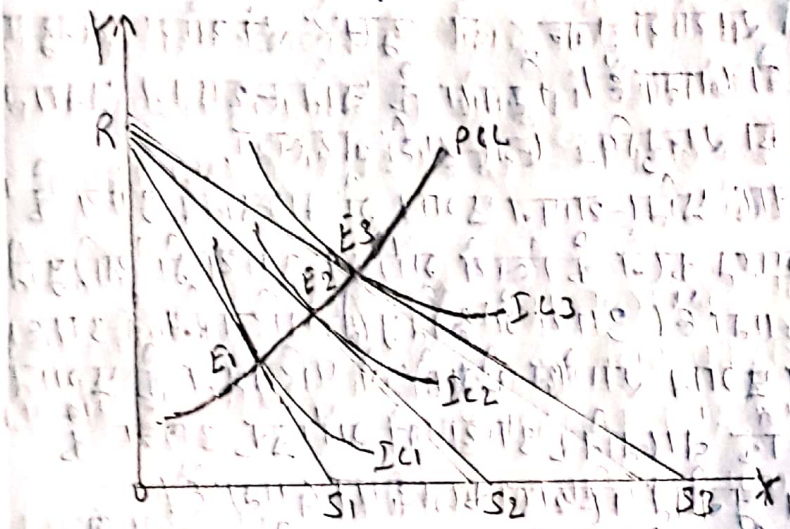

⇒ कीमत उपभोग रेखा (PCC) एक वस्तु की कीमत बदलने पर [जबकि दूसरी वस्तु की कीमत स्थिर आय स्थिर रहती है] उपभोक्ता के सन्तुलन की परिस्थितियों को प्रदर्शित करता है।